अमर उजाला
बरेली
सोमवार, 27 फरवरी 2023
फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
विक्रम संवत-2079

PAGE NO : 4MIDDLE

स्वाभाविक इच्छाओं के साथ जीने का दिया संदेश

बरेली। रिद्धिमा में रविवार को मुंशी प्रेमचंद के नाटक बड़े भाईसाहब का मंचन हुआ। इस दौरान दिखावे के बजाय स्वाभाविक इच्छाओं के साथ जीने का दिया संदेश दिया गया। मुख्य पात्र बड़े भाई साहब छोटे भाई से पांच साल बड़े हैं और अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। दोनों छात्रावास में रहते हैं। बड़े भाई खेलकूद के बजाय पढ़ाई पर ध्यान देते हैं, लेकिन छोटे भाई का मन पढ़ने में बिल्कुल नहीं लगता। वह खेलकूद में लगा रहता। बड़े भाई साहब बार-बार परीक्षा में फेल हो जाते हैं और छोटा भाई हर बार कम पढ़ने के बाद भी अपनी कक्षा में प्रथम आता है। कहानी के अंत में लेखक ने बड़े भाई साहब के मन का रहस्य खोला है कि छोटे भाई को उसके कर्तव्यों का बोध कराने के कारण ही वह अपनी स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते। इसके बाद छोटे भाई को अपनी गलती का एहसास होता है और वह बड़े भाई से माफी मांगता है। ब्यूरो